

## इस्लाम में परिवर्तित होने के लाभ (भाग 3 का 3)

रेटिंग: 2.6

विवरण:

श्रेणी: [लेख इस्लाम में कैसे परिवर्तित हों इस्लाम में कैसे परिवर्तित हों और मुसलमान कैसे बनें](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2011 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

इस्लाम में परिवर्तित होने के लाभों की गणना करना बहुत कठिन है, फरि भी हमने उनमें से कुछ ऐसे लाभों को ही चुना है, जो अन्य से ऊपर और अलग हैं।

### 8. इस्लाम अपनाने से जीवन के सभी बड़े सवालों का जवाब मलि जाता है।

इस्लाम में परिवर्तित होने के प्रमुख लाभों में से एक यह है कयिह कोहरा और धुंध हटाता है। अचानक जीवन और उसके सभी उतार-चढ़ाव किसी हद तक स्पष्ट हो जाते हैं, सब थोड़ा अधिक समझ में आने लगता है। हज़ारों सदियों से मानव जातिको परेशान करने वाले बड़े सवालों के सभी जवाब स्पष्ट हो जाते हैं। हमारे जीवन के किसी भी समय,



जब हम खाई के किनारे या सड़क के दो राहे पर खड़े होते हैं, तो हम खुद से पूछते हैं - "क्या यही है, क्या वास्तव में यही सब है? नहीं, केवल इतना ही नहीं है, इस्लाम सवालों का जवाब देता है और हमें भौतिकवाद से परे देखने और यह देखने के लिए कहता है कयिह जीवन अनंत जीवन के रास्ते पर एक क्षणिक पड़ाव से कुछ अधिक ही है। इस्लाम जीवन को एक स्पष्ट उद्देश्य और लक्ष्य देता है। एक मुसलमान के रूप में हम ईश्वर के शब्दों, कुरआन और उसके अंतिम दूत पैगंबर मुहम्मद के उदाहरण में उत्तर खोजने में सक्षम हैं, ईश्वर की दया और आशीर्वाद उन पर हो।

मुस्लिम होना पैदा करने वाले के प्रति पूरण समर्पण और इस तथ्य को इंगति करता है कहिम केवल ईश्वर की आराधना करने के लिए ही बनाये गए थे। हम यहां इस घूमते हुए ग्रह पर, जो अनंत प्रतीत होने वाले ब्रह्मांड में है; अकेले ईश्वर और पैदा करने वाले मालिक की आराधना करने के उद्देश्य से हैं। इस्लाम में परिवर्तित होने से हम एकमात्र संभावित अक्षम पाप अर्थात अन्य देवताओं को

ईश्वर के साथ जोड़ने से मुक्त हो जाते हैं।

**"मैंने (ईश्वर) ने केवल मेरी (अकेले) की आराधना करने के लिए ही जनिन और मानव जातिको बनाया है।" (कुरआन 51:56)**

**"हे मानव जाति, ईश्वर की आराधना करो, तुम्हारा उसके अलावा कोई और ईश्वर नहीं है।" (कुरआन 7:59)**

हालांकि, यह कहा जाना चाहिए कि ईश्वर को मानव पूजा की बलिकुल आवश्यकता नहीं है। यद्यपि भी मनुष्य ईश्वर की आराधना नहीं करता, तो यह उसकी महिमा और महानता को किसी भी तरह से कम नहीं करता, और यद्यपि सारी मानवजात उसकी आराधना करती, तो यह चीज़ भी उसकी महिमा और महानता में किसी भी तरह से वृद्धि नहीं करती।<sup>[1]</sup> हमें, मानव जातिको, ईश्वर की आराधना करने का सुख और सुरक्षा की आवश्यकता है।

## **9. इस्लाम में परिवर्तित होने से जीवन के हर पहलू को आराधना करने की अनुमति मिलती है।**

इस्लाम धर्म सभी मानव जातिके लाभ के लिए प्रकट किया गया था जो न्याय के दिन तक मौजूद रहेगा। यह जीवन का एक संपूर्ण तरीका है, ऐसा नहीं है कि इस्लाम को केवल सप्ताहांत या वार्षिक त्योहारों में अभ्यास किए जाने वाले लाभ के लिए प्रकट किया गया था। एक ईमान वाले का ईश्वर के साथ संबंध दिन के चौबीस घंटे और सप्ताह के सातों दिन होता है। यह रुकता और शुरु नहीं होता है। अपनी असीम दया के माध्यम से, ईश्वर ने हमें जीवन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसमें आध्यात्मिक, भावनात्मक और शारीरिक सभी पहलुओं को शामिल किया गया है। उसने हमें अंधेरे में ठोकर खाने के लिए अकेला नहीं छोड़ा है, बल्कि ईश्वर ने हमें मार्गदर्शन की पुस्तक कुरआन दी है। उसने हमें पैगंबर मुहम्मद की प्रामाणिक परंपराएं भी दी हैं, जो कुरआन के मार्गदर्शन की व्याख्या और वसितार करती हैं।

इस्लाम हमारी शारीरिक और आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करता और उन्हें संतुलित करता है। पैदा करने वाले द्वारा अपनी रचना के लिए तैयार की गई यह प्रणाली न केवल उच्च स्तर के व्यवहार, नैतिकता और आचरण की अपेक्षा करती है, बल्कि यह प्रत्येक मानव कार्य को आराधना में बदलने की अनुमति भी देती है। वास्तव में, ईश्वर ईमान वालों को अपना जीवन उसे समर्पित करने की आज्ञा देता है।

"कहो: 'नश्चय ही मेरी प्रार्थना, मेरा बलदान, मेरा जीना और मेरा मरना उस ईश्वर के लिए है, जो सभी दुनिया के ईश्वर है।" (कुरआन 6:162)

## 10. इस्लाम अपना ने से सभी रश्ते सौहार्दपूर्ण हो जाते हैं।

ईश्वर जानता है कि उसकी रचना के लिए सबसे अच्छा क्या है। उन्हें मानव मानस का पूरा ज्ञान है। नतीजतन इस्लाम स्पष्ट रूप से ईश्वर, हमारे माता-पिता, जीवनसाथी, बच्चों, रश्तेदारों, पड़ोसियों, आदिके प्रति हमारे अधिकारों और जम्मेदारियों को परभाषति करता है। इस्लाम में परिवर्तित होने से व्यक्ति सभी परस्थितियों का आत्मवश्वास के साथ सामना कर सकता है। इस्लाम हमारा जीवन के आध्यात्मिक, राजनीतिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक सभी पहलुओं के माध्यम से मार्गदर्शन करने में सक्षम है।

जब हम ईश्वर का सम्मान करने और उसकी आज्ञा मानने के अपने दायित्व को पूरा करते हैं, तो हम स्वतः ही उन सभी शष्टाचारों और नैतिकता के उच्च मानकों को प्राप्त कर लेते हैं, जिनकी इस्लाम मांग करता है। इस्लाम में धर्मांतरण का अर्थ है ईश्वर की इच्छा के अधीन होना और इसमें मानव जाति सभी जीवित प्राणियों और यहां तक कि पर्यावरण के अधिकारों का सम्मान और आदर करना शामिल है। हमें जरूर ईश्वर को जानना चाहिए और नर्णय लेने में उसके अधीन होना चाहिए, जिससे उसकी रज़ामन्दी प्राप्त हो।

अंत में, इस्लाम में परिवर्तित होने का एक लाभ है जो हर दिन को आनंदमय बनाता है। मुसलमान चाहे किसी भी परस्थिति में खुद को पाते हों, वे इस ज्ञान में सुरक्षित हैं कि इस ब्रह्मांड में कुछ भी ईश्वर की अनुमति के बिना नहीं होता है। परीक्षण, आजमाइश और वजिय सभी अच्छे हैं और यदि उनका सामना ईश्वर पर पूर्ण वश्वास के साथ किया जाए, तो वे एक सुखद नष्कर्ष और वास्तविक संतोष की ओर ले जाएंगे। पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "नश्चय ही एक ईमान वाले के मामले आश्चर्यजनक हैं! वे सभी उसके लाभ के लिए हैं। अगर उसे आराम दिया जाता है, तो वह आभारी है, और यह उसके लिए अच्छा है। और यदि वह किसी कठिनाई से पीड़ित होता है, तो वह दृढ़ रहता है, और यह उसके लिए अच्छा है।" [2]

---

फुटनोट:

[1]

डॉ अबू अमीना बलिल फलिप्स की कताब "थि परपोज ऑफ क्रैशन"।

इस लेख का वेब पता:

<https://tel.islamreligion.com/hi/articles/4550>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2024 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।